International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 06-05-2020; Accepted: 15-05-2020; Published: 09-06-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 40-42

नारी विमर्श के अलोक में 'पास्वर्ड' उपन्यास

शाफिया फरहिन
शोधार्थी, हिंदी अध्ययन विभाग, मैसूर विश्विद्यानिलय, मानसगंगोत्री, मैसूरु, कर्नाटक, भारत

प्रस्तावना

स्त्री के आत्मसम्मान, आत्मचेतना, समता और समनाधिकार का ही दूसरा नाम स्त्री विमर्श है । नारी पर किये गये शोषण और दमन के प्रति नारी द्वरा किये गये शोषण ने ही नारी विमर्श को जम्न दिया है। स्त्री विमर्श की परिकल्पना स्वधीनता का ही दूसरा नाम है। स्त्री के आत्म्बोध ने ही स्त्री विमर्श की बुनियाद रखी है। पित्रुसत्तात्मक पद्धति तथा पराधीनता से बाहर निकलने का काम नारी विमर्श द्वारा ही सम्भव हो पाया है। प्रो. प्रतिभा मुदलियार लिखती हैं - "स्त्री विमर्श का पुरुश के विरुद्ध युद्ध नहीं है, बल्कि स्त्री को मानवीयता के नियमों की कसौटी पर अपने व्यक्तित्व को खोजना ही स्त्री विमर्श है, नारीवाद है"।[1]

इक्कीसवीं सदि तक आते-आते नारी आंदोलन ने ज़ोर पकड लिया था जिसके कारण हिंदी साहित्यकार विशेशतः महिला साहियकारों का रुझान स्त्री पर केंद्रित हो गया। एकाध लेखकों के अतिरिक्त लगभग सभी महिला सहित्यकारों ने नारी विमर्श सम्बंधी रचनाएं की हैं। स्त्री विमर्श पर लिखनेवाली लेखिकाओं में कमल कुमार, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, मेहुन्निसा पर्वेज़ का नाम अग्रणीय है। 2010 में मृदुला गर्ग का आत्म्कथात्मक उपन्यास 'मिलजुल मन' प्रकाशित हुआ जिसमें वे लिखती हैं - " फेमिनिज़्म आया अब जाकर। मर्दाना तो औरतों को भी होना पडेगा।"[2] अर्थात् आज अपनी अस्मिता बनाए रखने के लिए स्त्री को मर्द की तरह सोचना और काम करना पड रहा है। कमल कुमार जी कहती हैं- "स्त्री विमर्श की अवधारणा को पश्चिम की देन समझा जाता है"।[3] अर्थात् इसके पक्ष और विपक्ष में अनेक मत प्रस्तुत किए जाते हैं और यह "पितृसत्ता नहीं पितृसत्ता की सामंतशाही के विरोध में है"।[3] "वास्तव में नारी विमर्श एक विचारधारा है जिसने सदियों से चली आ रही पितृक सत्ता को चुनौती दी और नारी मुक्ति का मार्ग खोला"।[4]

इक्कीसवीं सदि की महिला कथाकारों ने 'स्त्री' को केंद्र में रखकर लेखन किया है। और स्त्री विमर्श की पैरवी की है। स्त्री सहियकारों ने अपनी रचनओं द्वारा केवल नारी चेतना को बढावा ही नहीं दिया अपितु महिला लेखन को समृद्ध भी बनाया है। कई साहित्यकारों ने केवल भारत ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर हो रहे नारी विमर्श का चित्रण किया है। कमल कुमार इक्किसवीं सदि की एक सशक्त कथाकार हैं जिन्होने अपने कथा साहित्य के माध्यम से स्त्री के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। 'पास्वर्ड' उपन्यास एक ऐसी ही रचना है। कमल कुमार जी ने इस उपन्यास में स्त्री की संवेदना तथा समस्याओं को केंद्र में रखा है। 'पास्वर्ड' उपन्यास में कथानक किसी कहनी की तरह नहीं चलता बल्कि उन्होंने ई-मेल के माध्यम से कहानी का ताना-बाना जोडा है जो बहुत अद्वितीय है। ई-मेल शैली को अपनाने का लेखिका को यह भी फायदा हुअ कि वे उपन्यास के किसी भी भाग में अलग-अलग घटनाओं एवं विषयों को एक साथ अभिव्यक्त कर पाई हैं।

उपन्यास का नायक आशीष पेशे से डॉक्टर है उससे चरित्र नायिका की मुलाखात अस्पताल में ही हुइ थी और मेल-जोल का सिलसिला बना था। यही मेल-जोल दोनों को एक दूसरे के करीब भी ले आता है। आशीष तलाकशुदा है और उसकी मंगनी भी हो गई है वह एक ऐसी औरत से रिश्ता बना लेता है जो शादीशुदा है। अपने-अपने जीवनसाथियों से ताल-मेल ना बैटना ही इस प्रकार के विवाहेतर प्रेम को जन्म देता है। पांच साल इसी रिश्ते को निभाने के पश्चात आशीष अमरीका चला जाता है और इन दोनों का रिश्ता एस.एम.एस तथा ई-मेल के माध्यम से चलता रहता है। नायिका ई-मेल के माध्यम से आशीष को अतीत की याद दिलाती रहती है। 'पास्वर्ड' उपन्यास केवल दो लोगों के बीच घटी अतीत की सुखद घटनाएं ही नहीं बल्कि वर्तमान में चल रहे अनुभवों को भी समेटता है। उपन्यास पढ़ते समय पाठक को यह एहसास होता रहता है कि वह किसी दूसरे के ई-मेल को चोरी-छिपे पड रहा है।

नारी विमर्श पर आधारित इस उपन्यास के प्रारम्भ में ही लेखिका ने थाईलैंड, पटाया, , बैंकॉक सिंगापुर आदि में हो रहे देह व्यापार पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। वे उन लडकियों के लिए चिंतित होकर अपने तथाकथित प्रेमी से चर्चा करते हुए कहती हैं कि यहाँ ये लडकियां सिर्फ अपनी मर्ज़ी से देह व्यापार नहीं करती बल्कि कईयों के पति स्वयं इनसे यह काम करवाते हैं। और इन जगहों में देह व्यापार गैरकानूनी भी नहीं है। पर लेखिका यह सोचकर विचलित होती हैं कि "बिना भावनात्मक रिश्ता बने और एहसास के, शारीरिक रिश्ता कैसा होता होगा।"[5] किसी वस्तु की तरह औरत के शरीर क इस प्रकार इस्तेमाल उसकी संवेदना को वेदना में परिवर्तित कर देता है। वास्तव में लेखिका ने अपना पक्ष सदा ही स्त्री पर केंद्रित रखा है। उपन्यास का नायक जब अपनी पूर्व पत्नी से मिले दुखद अनुभव बताता है तो वे उत्तर देती हैं - "सच कहूँ, मुझे तुम्हारी बातें सुनकर आशिमा (पूर्व पत्नी) के तुम्हारे साथ हुए दुर्व्यवहार की कहानियां सुनकर भी तुम्हारे

प्रति मेरे मन में कभी सहानुभूति नहीं जागी थी। मेरे भीतर की औरत ने कभी तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं किया।"[6] उसने एक औरत का ही साथ दिया । इससे ज्ञत होता है कि लेखिका का विश्वास पुरुष से अधिक स्त्री पर है। उनके मन में बार-बार विचार आत है कि आशीष के अंदर के 'पति' ने आशिमा के साथ ऐसा क्या किया होगा? कोई तो असुरक्षा रही होगी।

ने चरित्र नायिका के माध्यम से जहाँ खुद को नारीवादी बताया है वहीं नारी द्वारा किए गए दुष्कर्मों की आलोचना भी की है। वे आशीष से एक औरत द्वारा की गई अमानवीय घटना सुनाती हैं कि उस औरत ने अपने सौलह साल के प्रेमी के लिए अपनी साढे तीन साल की बच्ची को न सिर्फ मार डाला बल्कि उसके शव को जलाया और टुकडे-टुकडे कर चार अलग-अलग जगहों पर फेंक भी दिया। वे पूछती हैं क्या प्यार ऐसा होता है? इसमें पागलपन तो होता है पर ऐसी हिंसा जो सुनने में ही कितनी डरावनी होती है। देह का ऐसा पागलपन तो अपराध के द्वार खोलता है। मनुष्य की भावनाओं का लक्षय मन के साथ-साथ देह को भी पाना होता है। भावनाओं और प्रेम के बिना सिर्फ शरीर को प्राप्त कर लेना सिर्फ शारीरिक आवश्यकता पूरी करता है इससे कोइ नैतिक सहायता नहीं मिलती। लेखिका ने शारीरिक रिश्ते के मुकाबले भावनात्मक रिश्ते को ही प्राथमिकता दी है। वे चरित्र नायिका द्वारा आशीष से कहती हैं- "तुम जानते हो मेरी ज़रूरत शारीरिक नहीं। भौतिक भी तो नहीं भावनात्मक थी मेरी ज़रूरत, पर आखिर ये भावनाएं भी तो देह पर ही साक्षत होती हैं। तो भी देह से शुरु होकर देह पर खतम हो गया रिश्ता कैसा होता होगा, नहीं जानती।"[7]

भारतीय विवाह परम्परा की आलोचना करते हुए वे कहती हैं- "हमारे यहाँ विवाह की शुरुआत ही गलत होती है। क्यों दूल्हा घोडी चढ़कर, कमर में तलवार लटकाकर, बैंड बाजे के साथ लडकी को ब्याहने के लिए आता है विजेता की तरह।"[8] क्यों मा-बप ये भूलजाते हैं कि उनकी बेटी कोइ वस्तु नहीं जो जीतने पर ईनाम या तोहफे की तरह दे दी जाए। उनका मत है- "जो अच्छा प्रेमी होता है, वह अचछा पति नहीं हो सकता। अच्छा पति और प्रेमी तो दो ध्रुव हैं।"[9] क्योंकि एक प्रेमी ही अपनी प्रेमिका की संवेदनाओं का दमन नहीं करता जबकि पति के मामले में यह बात विपरीत है। पति पत्नि पर सिर्फ अपना अधिकार जमाना चाहता है और चाहता है कि वह घर संभाले, उसके बच्चों को पालने की ज़िम्मेदारी भी वही निभाए। वह पत्नि को घर की मालकिन नहीं बंधुआ मज़दूर बना देता है। लेखिका कि दृष्टि में घर एक इंडुस्ट्री की तरह होता है, "असल में औरत घर की सी.ई.ओ और श्रमिक दोनों होती हैं, होनी ही चाहिए, पर होता क्या है, वह सिर्फ मज़दूर बनकर रह जाती है।"[10] विवाह के मुद्दे को लेखिका ने कई बार अपनी चर्चा का विषय बनाया है और अपने विचार मुक्त रूप से व्यक्त भी किए हैं। उनका मानना है कि औरत भावनात्मक सुरक्षा, व्यक्तित्व की संपन्नता तथा पूर्णता के लिए शादी करती है, शादी जीवन यापन के लिए सुविधा पाने का उपाय भी है और जीने का कारण भी। इंसान विशेषतः औरत इस पूर्णता को पाने की चाह में अपने आप को बदल भी लेती है। भले ही शुरुआत में एक दूसरे को समझने और साथ रहने में कठिनाइयां हों पर वक़्त के साथ सारे विरोध खत्म हो ही जाते हैं।

भारतीय नारी की संवेदना उपन्यासों में भी अपना गहरा प्रभाव डालती है। भले ही उसका पति उसे प्रेम और सम्मान न देता हो फिर भी वह अपने पति के प्रति सदा निष्ठावान ही रहती है। यदि वह मन ही मन किसी अन्य को चाहने भी लग जाए तब भी वह पति से बेवफाई करने की हीन भावना से ग्रस्त रहती है। चरित्र नायिका अपने प्रेमी के साथ मंदिर जाती है परंतु अंदर जाने में उसे भय होता है वह कहती है यदि वह आशीष के साथ अंदर गई तो भगवान नाराज़ हो जएंगे क्योंकि आशीष न उसका पति है और न ही भाई यह तो अपरिभाशित रिश्ता है जो सिर्फ भावनाओं से जुडा हुआ है। फिर सोचती हैं कि कृष्ण जी ने भी तो राधा से ब्याह नहीं किया था, आम आदमी तो उन्हे रास रचैय्या, मुरली बजैय्या और राधे कृष्ण कहकर पुकारता है। यहाँ लेखिका ने नई पीढी के भगवान को देखने के नज़रिये को इस तरह दर्शाया है कि वे भगवान को माचो मैन के नाम से संबोधित करते हुए आशीष को भगवान के सिक्स पैक एब्स, रोमन हीरो के शरीर और उसके मैट हेयर स्टाइल को दिखाते हुए कहती हैं कि यह भगवान तो रॉकस्टार हैं।

ग्रीस की एक प्रसिद्ध कथा 'अडीपस द किंग' का ज़िक्र करते हुए कहती हैं- "हमारे यहाँ देखा गया है कि बेटियों को पिता और बेटों को मांओं ने ही प्रेम में सदा प्राथमिकता दी है। समाज में जहाँ भी देखो मां को बेटियों से ज़्याद बेटे ही प्यारे लगते हैं। इसका यह भी कारण हो सकता है कि वह वंश को आगे बढ़ाएगा, वृद्धावस्था का सहारा बनेगा और अंतिम कार्यों की पूर्ति भी करेगा। वे लिखती हैं- "मां का अपने युवा बेटे के साथ स्त्री-पुरुष का ही रिश्ता होता है बस, उसमें सेक्स नहीं होता।"[11] क्योंकि मां ही है जो अपने बेटे को प्यार करती है, खिलाती-पिलाती है और उसकी हर इच्छा को पूर्ण करने का प्रयत्न करती है।

क्ट्टर मुस्लिम परिवारों में हो रही महिलाओं की व्यथा की चर्चा करते हुए वे 'ए बहराइन' द्वारा लिखी अरब मुस्लिम परिवार की कहानी के बारे में कहती हैं- एक लडकी की शादी सिर्फ इसलिए उसकी इच्छा के विरुद्ध कर दी जाती है क्योंकि वह किसीसे प्यार करती थी। हालांकि प्रेम विवाह इस्लाम के विरुद्ध नहीं है। वह लडकी इस शादी से इतनी हताश हो जाती है कि वह खुदको जलाकर आत्महत्या कर लेती है। वहीं उसकी छोटी बहन इसके विपरीत जाकर अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है। खुद को सबसे सभ्य और आधुनिक समझनेवाला पिछडा समाज असल में स्वतंत्र सोच रखनेवाली लडकियों का अर्थ प्रेम विवाह से जोडकर निकालता है। यहाँ पढी-लिखी, समझदार का अर्थ सुशिक्षित नहीं बल्कि विद्रोही माना गया है। लेखिका का कथन है- "औरतों की यह नई पीढी है जो पुरानी पीढी की यातना और घरों से बाहर आती है, अपने से पिछली पीढी ने जो मुक्ति के सपने देखे, उसे यह पीढी पूरा करती है।"[12]

पास्वर्ड उपन्यास पूर्णतः स्त्री विमर्श, स्त्री पक्षधरता और नारीवाद पर लिखा गया है, जहाँ लेखिका ने स्त्री पर हो रहे दमन को तो दिखाया ही है पर आज के समाज मे नारी विशेशतः नई पीढी में जो स्वयं की चिन्ता तथा अपनी अस्मिता को बनाए रखने की ललक है उसको यथार्थ रूप से वर्णित भी किया है। आज की नारी जिसके विचार मुक्त हैं और वह अपने विचारों को बेबाक होकर व्यक्त भी कर रही है। आज

की नारी अपने आप को सहज और सुरक्षित समझती है अगर उसे किसी प्रकार की असुरक्षा है तो वह संवेदना तथा भावनात्मक असुरक्षा है। उपन्यास में जब चरित्र नायिका अपने प्रेमी से अपनी बीमरी पर बात करती हैं तब वह उन्हें आश्वासन देता हुआ कहता है 'में आपको कुछ नहीं होने दूंगा' इस पर उनकी प्रतिक्रिया रही कि 'तुम्हारी इन बातों से मेरे अंदर की निरीह औरत सच में आश्वस्त हो जाती है' यहाँ पाठक को यह बात खटकती है कि नारीवादी कथाकार आखिर चरित्र नायिका को निरीह क्यों कहेगी? कारण यह है कि प्रत्येक मनुष्य सिर्फ धनी और सफल ही नहीं बनना चाहता बल्कि वह अन्य मनुष्य विशेषतः प्रियजन से प्रेम और सांत्वना की अपेक्षा रखता है और नैतिक सहायता चाहता है। भले ही कितना बडा दुख ही क्यों न हो केवल उस व्यक्ति विशेष का छोटा सा दिलासा भी बडी सांत्वना का अनुभव करवाता है।

लेखिका ने उपन्यास के माध्यम से प्रेम की विभिन्न स्थितियों पर सवाल उथाए हैं। मूलतः विवाहेतर प्रेम को दर्शाय है परंतु जगह-जगह वैश्विक जगत में प्रेम के नाम पर होनेवाली मार्मिक तथा हिंसक घतनाओं का भी चित्रण किया है। लेखिका कहती हैं कि भगवान ने औरत के अंदर औरत होने की प्रोग्रामिंग इतने सटीक तरह से की है कि वह बहुत रिजिड हो गई है। एक स्त्री के अंदर बहुत सारी स्त्रियां होती हैं, जो परिस्थिति के अनुसार प्रकट भी होती हैं। साथ ही उन्होने सवाल उठाया है कि क्यों स्त्री को केवल सुख का माध्यम बनया है वे कहती हैं- "औरत की पूर्ण तृप्ति संभोग में, काम कर्म में नहीं होती। उसकी मनःस्थिति की अनुरूपता में और उसके व्यवहार की अनुकूलता में हिती है, लेकिन पुरुष की सारी सोच अपने सुख के लिए है। स्त्री वहां सिर्फ उसके सुख का माध्यम है। उस सुख की भागीदारी नहीं।"[13] उनका कहना है कि - "औरत के लिए काम कर्म उतना प्रमुख नहीं होता, जितनी उसकी प्रक्रिया। यह प्रक्रिया जो उसकी मनःस्थिति की अनुरूप में हो और दशा और दिशा उसीसे निर्धारित हो, वह अपने को हीन, क्षारित और पराजित अनुभव न करे।"[14] लेखिका यह सवाल खडा कर रही हैं कि क्या स्त्री की अपनी शारीरिक उत्तप्त काम्नाएं नहीं होतीं? यदि होती हैं तो उनका साहित्य में अंकुठन भी स्वीकारना चहिए।

संदर्भ सूची

1. स्त्री विमर्श: समकलीन साहित्य संदर्भ पृ. 11 प्रो. प्रतिभा मुदलियार, अमन प्रकाशन, कानपुर
2. मिलजुल मन पृ. 73-74 म्रुदुला गर्ग, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
3. कथा अंतर्कथा पृ. 128 कमल कुमार सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
4. वही पृ 131 कमल कुमार सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
5. स्त्री विमर्श: समकलीन सहित्य संदर्भ प्रु. 11 प्रो. प्रतिभा मुदलियार, अमन प्रकाशन, कानपुर
6. पासवर्ड पृ. 20 कमल कुमार, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
7. पास्वर्ड पृ. 41 कमल कुमार, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
8. वही पृ. 41
9. वही पृ. 41
10. वही पृ. 98
11. वही पृ. 42
12. वही पृ. 52
13. वही पृ. 104
14. वही पृ. 145
15. वही पृ. 146